nayaraipur
नया रायपुर

#InTheNews
Edition: Raipur (C.G)
Date : 9th Oct. 2017

नवभारत

सुबह-सुबह खूबसूरत पक्षियों को देख खिल उठे बच्चों के चेहरे

■ नवभारत रिपोर्टर | रायपुर.

रविवार की सुबह नया रायपुर के सेंध जलाशय में डेढ़ सौ से ज्यादा बच्चों के चेहरे नीलकंठ, मैना समेत विभिन्न

क्रमण

- एनआरडीए ने सेंध जलाशय में आयोजित किया 'बर्ड वॉचिंग' कार्यक्रम
- 150 स्कूली बच्चों के साथ पक्षी वैज्ञानिक और अधिकारी सम्मिलित हुए

प्रजातियों के पक्षियों को देखकर खिल उठे. इन बच्चों को इन पक्षियों के बारे में भी पक्षी वैज्ञानिकों द्वारा विस्तार से बताया गया.

एनआरडीए ने आज स्कूली बच्चों के लिए 'बर्ड वॉचिंग' कार्यक्रम का आयोजन किया था. इसमें 150 से अधिक स्कूली बच्चे शिक्षकों और पालकों के साथ पहुंचे. इस दौरान पक्षी वैज्ञानिक और अधिकारी भी मौजूद थे. पक्षियों को देखने बच्चों में काफी उत्साह था. मैना, किंगफिशर यानी कठफोड़वा, ग्रीन बी ईटर जैसे पक्षियों को बच्चों न केवल देखा, बल्कि उनके बारे में रोचक तथ्य जानकार काफी प्रभावित हुए. बच्चों ने अनुभव साझा करते हुए बताया कि कई बार ग्रीन बी ईटर पक्षी को देखा है मगर हमें पता नहीं था कि उसकी आँखों में काजल भी होता है. यह भी जाना कि कैसे पक्षी वातावरण में मौजूद तरंगों को पहचान सकते हैं. बच्चे सुबह 6 बजे सेंध जलाशय में उपस्थित हो चुके थे. बच्चों को 7 टीमों में विभाजित किया गया था. प्रत्येक टीम में विद्यार्थियों के साथ एक पक्षी विशेषज्ञ और अध्यापक शामिल थे. शिक्षकों और नागरिकों ने कहा कि हमें यहां बहुत ही आकर्षक एवं सुंदर पक्षी देखने को मिले. हमें यह महसूस हुआ कि छत्तीसगढ़ में भी कई प्रकार के प्रवासी पक्षी आते हैं. बर्ड वॉचिंग कार्यक्रम में पं. रविशंकर शुक्ल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर एम. एल. नायक, एनआरडीए के पूर्व महाप्रबंधक बी. के. लाल, छत्तीसगढ़ विज्ञान सभा के सचिव पी. सी. रथ, नोवा नेचर सोसायटी के एम. सूरज और अभनपुर के एसडीएम जोगेंद्र नायक शामिल थे.

ठंड में आते हैं प्रवासी पक्षी

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ वाइल्ड लाइफ सोसायटी के अध्यक्ष एम. के. भरोस ने बताया कि भारत में लगभग 1500 प्रजातियों के पक्षी पाए जाते हैं. जिनमें से करीब 1250 मुख्य प्रजातिया हैं व अन्य उपप्रजाति. छत्तीसगढ़ के विभिन्न हिस्सों में तकरीबन 500 प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं. इनमें करीब 70 - 80 प्रजातियां ऐसी हैं जो ठंड के मौसम में दूसरे देशों से आती हैं. सेंध तालाब में कई प्रजातियों के पक्षी आते हैं. एनआरडीए के महाप्रबंधक प्रशासन एम. डी. कावरे ने बताया कि 2014 में भी ऐसा कार्यक्रम रखा गया था. उन्होंने चिंता जाहिर करते हुए कहा कि पहले आसानी से अपने आसपास पक्षी देखने को मिल जाया करते थे. अब इनकी संख्या कम होती जा रही है जो चिंतनीय है.

सांपों के बारे में भी जानकारी दी

'बर्ड वॉचिंग' कार्यक्रम की सहयोगी संस्था नोवा नेचर वेलफेयर सोसायटी ने आसपास के क्षेत्रों के सांप दिखाये और उनके बारे में रोचक जानकारी दी. साथ ही बच्चों और बड़ों के मन में बसे डर को भी दूर भगाने का प्रयास किया. कार्यक्रम में मौजूद विद्यार्थियों ने गैर जहरीले सांपों को अपने हाथों से पकड़ा और उनके बारे में दिलचस्प सवाल भी पूछे. जिनका विशेषज्ञों ने समाधान किया.